जनसांख्यिकी और साक्षरता का भौगोलिक अध्ययनः एक विश्वलेष्णात्मक परिद्रश्य

*डॉ. सत्यवीर यादव
**बाबूलाल शर्मा

परिचय

जनसंख्या वृद्धि आज हमारे देश की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है, वहीं अगर इस समस्या पर समय रहते काबू नहीं पाया गया तो मनुष्य इस धरती पर रहना मुश्किल हो जाएगा और मनुष्य के जीवन जीने के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं बचेंगे, जिससे वे भुखमरी का शिकार हो जाएंगे। वहीं बढ़ रही जनसंख्या को लेकर लोगों को जागरूक करने के मकसद से हमारी सरकार द्धारा समय–समय पर अभियान भी चलाए जाते हैं जिससे लोग परिवार नियोजन के लिए अपने आगे कदम बढ़ा सके। जनसंख्या वृद्धि किसी भी देश के विकास में तो बाधा बनती ही है, इसके साथ ही कई और बड़ी मुश्किलें भी पैदा करती हैं। वहीं भारत में काफी गंभीर और बड़ी समस्या बन चुकी है। आज हमारे देश भारत में लगातार बढ़ रही जनसंख्या एक विकराल समस्या बन चुकी है। जनसंख्या वृद्धि की वजह से आज हमारा देश विकास के मामले में अन्य देशों की तुलना में काफी पीछे हैं। भारत में जनसंख्या बढ़ने से गरीबी बढ़ रही है, बेरोजगारी की समस्या पैदा हो रही है, व्यापार विकास और विस्तार गतिविधियां जरूरत से ज्यादा धीमी होती जा रही है, आर्थिक मंदी आ रही है। यही नहीं वन, जंगल, वनस्पतियां, जल संसाधन समेत तमाम प्राकृतिक संसाधनों का भी जमकर हनन हो रहा है और तो और खाद्य उत्पादन और वितरण भी, जनसंख्या के मुकाबले नाकाफी साबित हो रहा है। वहीं बढ़ती महंगाई भी जनसंख्या वृद्धि के सबसे मुख्य कारणों में से एक है।

सूचक शब्द – प्राकृतिक संसाधनों का हनन तो हो ही रहा है साथ ही में मानव निर्मित संसाधन भी नाकाफी साबित हो रहे हैं।

उद्देश्य

जनसंख्या वृद्धि के कारण ही आज हमें हर जगह घंटों लाइन में खड़ा होना पड़ा रहा है, रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों, अस्पतालों, धार्मिक या सामाजिक समारोह पर इतनी भीड़ रहती है कि कई बार पैर रखने तक की जगह नहीं मिलती है। साल 2011 की जनगणना के मुताबिक भारत की आबादी 1 अरब से भी ज्यादा 1, 210, 193, 422 हैं। आबादी के मामले में भारत, विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है।वहीं अगर ऐसा ही रहा है तो विशेषज्ञों के मुताबिक साल 2025 तक भारत, सबसे अधिक आबादी वाला दुनिया का पहला देश बन जाएगा।

जनसंख्या, किसी भी एक जगह में रहने वाले जीवों की संख्या है। वहीं दुनिया के कई हिस्सों में कुछ कारणों की वजह से जनसंख्या ज्यादा है, तो कई हिस्सों में आबादी का घनत्व बेहद कम हैं। वहीं विश्व में भारत, चीन समेत कुछ ऐसे देश हैं जहां आबादी इतनी बढ़ गई है कि यह गंभीर चिंता का विषय बन गई है, क्योंकि जनसंख्या बढ़ने से खाने और रहने के स्त्रोतों की कमी पड़ने लगती है साथ ही जरूरत से ज्यादा आबादी किसी भी देश के विकास में बाधा पैदा करती है।

जनसंख्या वृद्धि से होने वाले दुष्परिणाम –

बेरोजागारीः

देश में लगातार बढ़ रही जनसंख्या से बेरोजगारी की समस्या पैदा हो रही है, क्योंकि आबादी बढ़ने से अशिक्षित और अनपढ़ों की संख्या भी बढ़ रही है, जिससे बेरोजगारी की समस्या विकराल रुप धारण करती जा रही है।

गरीबीः

जाहिर सी बात है जब आबादी बढ़ती है तो, उसके हिसाब से साधन जुटा पाना मुश्किल हो जाता है क्योंकि एक सीमित मात्रा में ही हमें प्रकृति से संसाधन मिल पाते हैं। इसकी वजह से गरीबी की समस्या पैदा हो रही है।

महंगाईः

आबादी बढ़ने की वजह से महंगाई की दर लगातार इसलिए बढ़ती जा रही है, क्योंकि उत्पादन सीमित है जबकि खपत ज्यादा है, इसलिए वितरण आबादी के मुताबिक नहीं हो पा रहा है और महंगाई सातवें आसमान को छू रही है।

प्रदूषण में वृद्धिः

बढ़ रही आबादी से उद्योंगों की संख्या भी बढ़ रही है। इसके साथ ही वाहनों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है। वहीं इनसे निकलने वाली विषैली गैसें पर्यावरण को दूषित कर रही हैं।

जलवायु में बदलावः

जाहिर है कि बढ़ती आबादी का सीधा प्रभाव प्रकृति पर पड़ता है, क्योंकि आजकल मनुष्य अपने ऐश और आराम के लिए प्रकृति का दोहन करने में नहीं चूक रहा है। जिसका सीधा असर जलवायु पर पड़ रहा है और इससे मौसम चक्र में भी परिवर्तन आ रहा है।

पर्यावरण पर प्रभावः लगातार बढ़ रही आबादी पर्यावरण पर बुरा असर डाल रही है, क्योंकि मनुष्य चंद लालच और सुख–सुविधाओं के लिए प्राकृतिक संसाधनों का हनन करने से नहीं चूक रहा है और पेड़–पौधों को काट रहा है, जिसका बुरा असर पर्यावरण पर पड़ रहा है।

वन्यजीवों की प्रजातियों में कमः

सबसे बड़ी चिंता का विषय यह है कि आज, मानव की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है, जबकि वन्य जीवों की कई प्रजातियां विलुप्त होती जा रही हैं, क्योंकि मनुष्य अपने स्वार्थ के चलते वनों को नष्ट कर रहा है, जिसकी वजह से वन्य जीवन अपने निवास की गिरती गुणवत्ता और नुकसान की वजह से विलुप्त होते जा रहे हैं।

जीवन स्तर में कमीः

लगातार बढ़ रही आबादी से गरीबी, बेरोजगारी आदि की समस्याएं बढ़ रही हैं, जिससे लोगों के जीवन स्तर में कमी आई है बढ़ रही आबादी तमाम समस्याओं को जन्म दे रही है, अगर समय रहते इस समस्या को काबू नहीं किया गया तो आने वाले भविष्य में न जाने कितने लोग घुटन और भुखमरी की वजह से मर जाएंगे। इसलिए हम सभी को इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाने चाहिए।

शोध प्रश्न

साक्षरता का अर्थ है साक्षर होना अर्थात पढने और लिखने की क्षमता से संपन्न होना 1,। अलग अलग देशों में साक्षरता के अलग अलग मानक हैं। भारत में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अनुसार अगर कोई व्यक्ति अपना नाम लिखने और पढने की योग्यता हासिल कर लेता है तो उसे साक्षर माना जाता है। आज़ादी के समय भारत की साक्षरता दर मात्र बारह (१२:) प्रतिशत थी जो बढ़ कर लगभग चोहत्तर (७४:) प्रतिशत हो गयी है। परन्तु अब भी भारत संसार के सामान्य दर (पिच्यासी प्रतिशत ८५:) से बहुत पीछे है। भारत में संसार की सबसे अधिक अनपढ़ जनसंख्या निवास करती है। वर्तमान स्थिति कुछ इस प्रकार है:

- पुरुष साक्षरतारू बयासी प्रतिशत (८२:)
- स्त्री साक्षरतारू पैंसठ प्रतिशत (६५:)
- सर्वाधिक साक्षरत दर (राज्य): केरल (चोरान्वे प्रतिशत ६४:)
- न्यूनतम साक्षरता दर (राज्य): बिहार (चौसठ प्रतिशत ६४:)
- सर्वाधिक साक्षरता दर (केन्द्र प्रशासित): लक्षद्वीप (बानवे प्रतिशत ६२:)

जब से भारत ने शिक्षा का अधिकार लागू किया है, तब से भारत की साक्षरता दर बहुत अधिक बढ़ी है। केरल हिमाचल, मिजोरम, तमिल नाडू एवं राजस्थान में हुए विशाल बदलावों ने इन राज्यों की काया पलट कर दी एवं लगभग सभी बच्चों को अब वहाँ शिक्षा प्रदान की जाती है। बिहार में शिक्षा सबसे बड़ी समस्या है जिस से सरकार जूझ रही है। वहाँ गरीबी की दर इतनी अधिक है कि लोग जीवन की मूल–भूत आवश्यकताएं जैसे रोटी कपडा और मकान का भी जुगाड़ नहीं कर पातेद्य वे किताबों का खर्च नहीं उठा पाते।

साक्षर कौन हैं?

भारतीय नियम के अनुसार इस सूत्र में जो उन लोगों को भी शिक्षित गिना जाता है जो अपने हस्ताक्षर कर सकते हैं तथा पैसे का हिसाब किताब करना जानते हैं अथवा समझ सकते हैं अथवा दोनों।

वर्तमान में तेज गति से सामाजिक आर्थिक विकास हो रहा हैं. जरा सोचिये. यह विकास किसने किया हैं. इसके लिए लोग ही जिम्मेदार हैं. लोगों का शारीरिक श्रम एवं मानसिक क्षमता दोनों मिलकर प्रकृति में उपलब्ध चीजों के द्वारा अपने लिए अनेक संसाधनों का निर्माण करते हैं जो हमें विकास के पथ पर आगे बढ़ाते हैं. अतः किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण संसाधन होती हैं. जिनकी उद्यमशीलता पर विकास निर्भर करता हैं. जनसंख्या एवं उसके विभिन्न पक्षों का अध्ययन अति आवश्यक हैं क्योंकि किसी भी क्षेत्र का विकास वहां की जनसंख्या पर निर्भर करता हैं.

भारत की पहली जनगणना वर्ष 1872 में की गई थी जबकि पहली सम्पूर्ण जनगणना वर्ष 1881 में की गई थी. इसके प्रत्येक 10 वर्षों के अंतराल पर जनगणना का कार्य भारतीय जनगणना विभाग द्वारा किया जाता हैं. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 5.7 प्रतिशत भाग राजस्थान में निवास करता हैं.

कई दुसरे राज्य जैसे बिहार, बंगाल और केरल की तुलना में राजस्थान की आबादी उतनी सघन नहीं हैं. 6.9 करोड़ जनसंख्या में से लगभग 75 प्रतिशत लोग गाँवों में रहते हैं. राजस्थान की शहरी आबादी लगभग 25 प्रतिशत है जो

छोटे बड़े शहरों में निवास करती हैं.

जैसे राजस्थान के उत्तर पूर्वी भाग के मैदानी क्षेत्र में सघन एवं पश्चिमी भाग में स्थित थार के मरुस्थल में विरल जनसंख्या पाई जाती हैं. सघन एवं विरल क्षेत्र हमें जनसंख्या घनत्व के बारें में बताते हैं. जनसंख्या घनत्व एक मापक हैं जो किसी स्थान की जनसंख्या एवं उसके क्षेत्रफल में सम्बन्ध बताता हैं.

अर्थात एक स्थान के क्षेत्रफल लम्बाई' चौड़ाई जिसे हम वर्ग किमी में मापते हैं. पर निवास करने वालों की संख्या बताता हैं. जैसे राजस्थान में जनसंख्या का घनत्व 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हैं, जबकि बिहार में यह संख्या 1100 से अधिक हैं. इस तरह जनसंख्या घनत्व मापक की इकाई व्यक्ति प्रति किमी होती हैं. उदहारण के रूप में किसी गाँव की कुल जनसंख्या एक हजार है एवं उसका क्षेत्रफल 50 वर्ग किमी हैं तो उस गाँव का जनसंख्या घनत्व 1000 / 50 अर्थात 20 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी होगा.

राजस्थान का लिंगानुपात

प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या को लिंगानुपात कहा जाता हैं. भारत में केरल एवं पद्दुचेरी में ही स्त्रियों की संख्या पुरुषों की संख्या से अधिक हैं. अन्य सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या कम हैं. जो बड़ी चिंता का विषय हैं. लिंगानुपात हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति बताता हैं.

2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में लिंगानुपात 928 हैं. जबकि छः वर्ष से कम आयु के बच्चों में लिंगानुपात केवल 888 हैं जो अत्यंत कम हैं. इसके क्या कारण हो सकते हैं. और यह आगे क्या समस्या पैदा कर सकता हैं यदि समाज में महिला ओं की स्थिति अच्छी होगी तो उनका सम्मान होगा तो समाज या प्रदेश में लिंगानुपात उच्च होगा. और जिस समाज में महिला की स्थिति निम्न होगी उस समाज में लिंगानुपात भी निम्न होगा.

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

भारत सरकार द्वारा देश में महिला सशक्तिकरण एवं बेटियों के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए जनवरी 2015 में देश में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना शुरू की. इस योजना का मुख्य उद्देश्य बेटियों को शिक्षा द्वारा सामाजिक आर्थिक आधार पर आत्मनिर्भर बनाना हैं.
आधुनिक तकनीकी द्वारा गर्भ में बच्चे के लिंग का पता लग जाने से कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, महिलाओं के प्रति हिंसा, बाल विवाह, पुरुष प्रधान समाज, प्रवास के कारण नगरों में पुरुषों का अधिक होना, शिक्षा एवं कार्य सम्बन्धी भेदभाव आदि कारणों से बेटियाँ अपने आपकों असुरक्षित महसूस कर रही हैं.

इसीलिए सरकार ने यह योजना बेटियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए शुरू की हैं. यह योजना हमारे देश एवं समाज के लिए एक वरदान है. यदि बेटियों को सुरक्षा प्रदान नहीं की गई तो निकट भविष्य में इनकी संख्या कम होने से लिंगानुपात घट जाएगा. इसका समाज पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा. एवं शादी के लिए बेटियों की कमी और महिलाओं के प्रति अपराध जैसी कई समस्याओं का जन्म होगा.

राजस्थान की साक्षरता दर

जनसंख्या दर किसी भी क्षेत्र की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का पता लगाया जा सकता हैं. यह जनांकिकी में एक अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु हैं. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान राज्य की कुल साक्षरता 66.10 प्रतिशत

हैं. 76.6 प्रतिशत के साथ कोटा राजस्थान का सर्वाधिक साक्षरता वाला जिला हैं. जबकि सबसे कम साक्षरता जालौर में 54.9 प्रतिशत हैं. पुरुष एवं महिला साक्षरता क्रमशः झुंझुनूं एवं कोटा में सर्वाधिक तथा क्रमशः प्रतापगढ़ व जालौर में न्यूनतम हैं.

राजस्थान की जनसंख्या धर्म के आधार पर

भारत की तरह राजस्थान राज्य भी एक धर्म निरपेक्ष राज्य हैं, अर्थात यहाँ सभी प्रकार के धर्मों को मानने वाले लोग रह सकते हैं. यह राज्य हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध और इन मुख्य धर्मों के कई सम्प्रदायों जैसे शैव, वैष्णव, शिया, सुन्नी, मेव, पठान की जन्म भूमि एवं कर्म भूमि हैं.

यहाँ हिन्दुओं का तीर्थ पुष्कर, जैनों का दिलवाड़ा एवं इस्लाम का अजमेर शरीफ हैं. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हिन्दू धर्मावलम्बियों की आबादी ८५.५ प्रतिशत हैं. मुसलमान 9.1 प्रतिशत और शेष जनसंख्या सिक्ख, जैन एवं अन्य धर्मों के अनु यायियों की हैं.

भाषाई परिदृश्य

राजस्थान की आधिकारिक भाषा हिंदी हैं लेकिन आम बोलचाल और लोक साहित्य में राजस्थानी एवं उसकी सहयोगी भाषाओँ का महत्वपूर्ण योगदान हैं. राजस्थानी आर्यभाषा परिवार का एक भाषा समूह हैं. जिसमें कई बोलियाँ जैसे मारवाड़ी, मेवाड़ी, वागड़ी, ढूढाडी, शेखावाटी आदि प्रमुख हैं.

इनके अलावा यहाँ भीली, मेवाती, गुजराती, उर्दू और ब्रज भाषा भी बोली जाती हैं. ये भाषाएँ राज्य के अलग अलग प्रदेशों में अवश्य बोली जाती हैं. लेकिन उन्होंने एक लम्बे समय से एक दूसरे के साथ सामाजिक और व्यापारिक लेन देन के माध्यम से लगातार सम्बन्ध बनाए रखा हैं.

अनुसूचित जनजातियाँ

राजस्थान के सतरंगी सांस्कृतिक परिवेश को राज्य की जनजातियाँ और भी आकर्षक बनाती हैं. अनुसूचित जनजातियाँ अधिक तर गाँवों में, पहाड़ों में, पठारों एवं जंगलों में निवास करती हैं. अधिकांश खेती, मजदूरी, जंगल के उत्पाद को एकत्र कर जीवन का गुजारा करती हैं. राजस्थान की जनजातीय आबादी सिरोही से आरंभ होकर उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़ तथा बांसवाड़ा जिलों से होते हुए बूंदी, कोटा, सवाईमाधोपुर, टोंक तथा जयपुर जिलों के बीच निवास करती हैं.

राज्य की प्रमुख जनजातियाँ भील, गरासियाँ, मीणा एवं सहरिया हैं. राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या मीणा जनजाति की हैं. इसके अतिरिक्त भील, गरासिया एवं सहरिया जनजातियाँ भी प्रमुख हैं. सहरिया राजस्थान की एकमात्र जनजाति है जिसे भारत सरकार ने आदिम जनजाति समूह सूची में शामिल किया गया हैं.

परिकल्पना

सांगानेर राजस्थान राज्य में तहसील है, 2022 में सांगानेर तहसील की आबादी 1,241,211 है। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, कुल सांगानेर जनसंख्या 969,696 लोग इस तहसील में रह रहे हैं, जिनमें से 510,393 पुरुष और 459,303 महिलाएं हैं। 2023 में सांगानेर की आबादी 1,279,999 होने का अनुमान है। साक्षर लोग 396,679 में से 689,670 पुरुष हैं और 292,991 महिलाएं हैं। कुल श्रमिक 331,143 बहु कौशल पर निर्भर हैं जिनमें से 254,925 पुरुष और 76,218 महिलाएं हैं। कुल 34,635 किसान कृषि खेती पर निर्भर हैं, जिनमें से 19,902 पुरुषों द्वारा खेती

की जाती है और 14,733 महिलाएं हैं। सांगानेर में 5,508 लोग कृषि भूमि में मजदूर के रूप में काम करते हैं, पुरुष 3,499 और 2,009 महिलाएं हैं।

परिणाम एवं निष्कर्ष

हमने की जनसंख्या के वितरण, घनत्व और वृद्धि का अध्ययन किया भारत। हमने वितरण और घनत्व के कारणों और परिणामों पर भी गौर किया जनसंख्या का हमने तेजी से विकास के कारणों और परिणामों पर विचार किया पिछले सौ वर्षों से जनसंख्या का हमने कारणों पर भी ध्यान दिया और पिछले सौ वर्षों से जनसंख्या का हमने कारणों पर भी ध्यान दिया और पिछले सौ वर्षों से जनसंख्या का हमने कारणों पर भी ध्यान दिया और विभिन्न प्रकार के प्रवास के परिणाम। इस पाठ में हम रचना का अध्ययन करेंगे । विभिन्न प्रकार के प्रवास के परिणाम। इस पाठ में हम रचना का अध्ययन करेंगे कुछ आयामों के साथ भारतीय जनसंख्या का। सबसे पहले, हम नोट करना चाहेंगे बस्तियों का स्थान और आकार जिसमें लोग रहना पसंद करते हैं और ऐसा क्यों करते हैं। यह जनसंख्या की ग्रामीण और शहरी संरचना का गठन करता है। आगे हम पाएंगे यदि पुरुष और महिलाएं संख्या में समान हैं और अधिक महत्वपूर्ण स्थिति में हैं। आयु भारतीय जनसंख्या की संरचना संरचना और इसके निहितार्थ एक और होंगे हमारी पूछताछ का केंद्र बिंदु। तब हम विशुद्ध रूप से जनसांख्यिकीय से दूर चले जाएंगे हमारी जनसंख्या संरचना के सामाजिक–सांस्कृतिक आयाम। इससे हमें यह जानने में मदद मिलेगी हमारे समाज की भाषाई और धार्मिक संरचना। अंत में, हमारे पास एक नज़र है अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की संख्या, स्थान और के संबंध में वितरण। हमारे अध्ययन का अंतिम लेकिन कम से कम महत्वपूर्ण केंद्र बिंदु नहीं होगा हमारे समाज की साक्षरता दर और इसके प्रमुख सामाजिक घटक। ये सभी विश्लेषणात्मक पहलुओं से हमें अपनी जनसंख्या को न केवल संख्या के रूप में देखने में मदद मिलेगी, बल्कि एक मानव संसाधन भी साक्षरता क्षेत्र के समग्र विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह मानव संसाधनों की गुणवत्ता में सुधार करता है। साक्षरता सामाजिक–आर्थिक में मूलभूत परिवर्तन लाती है समाज का विकास। यह अध्ययन क्षेत्र के मानव संसाधन विकास के मापन का अच्छा संकेतक है। साक्षरता एक मानव अधिकार है, व्यक्तिगत सशक्तिकरण का एक उपकरण और सामाजिक और मानव विकास का एक साधन है साक्षरता को किसी भी समाज के विकास के सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक पहलुओं में से एक माना जाता है । साक्षरता शोषण, अन्याय के खिलाफ किसी के ज्ञान और समझ को बढ़ाती है और निर्णय लेने और बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त करने में मदद करती है और सामाजिक–आर्थिक कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जनसंख्या की गुणवत्ता का अंदाजा साक्षरता के स्तर से लगाया जा सकता है। नेल्सन मंडेला ने उद्धृत किया है कि षशिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं। सुविधा की दृष्टि से साक्षरता को अपनी मातृभाषा में अपना नाम पढ़ने और लिखने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है। एक साक्षर व्यक्ति वह है जो पढ़ने और लिखने दोनों में सक्षम है। साक्षरता से तात्पर्य किसी व्यक्ति की कम से कम एक भाषा में समझ के साथ पढ़ने और लिखने की क्षमता से है। संयुक्त राष्ट्र ने साक्षरता को षकिसी व्यक्ति की रोजमर्रा की जिंदगी पर एक छोटे से सरल बयानों को समझने के साथ पढ़ने और लिखने की क्षमताष के रूप में परिभाषित किया है यह अच्छी तरह से सिद्ध है कि समग्र साक्षरता समाज और क्षेत्र की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करती है। भारत ने देश में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के संबंध में 1951 से साक्षरता के क्षेत्र में लगातार प्रगति की है। ऐसा लगता है कि अध्ययन क्षेत्र ने कुल साक्षरता (82.31 प्रतिशत) के मामले में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर लिया है, लेकिन पुरुष–महिला असमानता (12.09 प्रतिशत), शहरी–ग्रामीण असमानता (11.93 प्रतिशत) और आदिवासी–गैर आदिवासी तहसील असमानता (15) को कम करने की चुनौतियां हैं। अध्ययन क्षेत्र के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और उच्च शिक्षा प्रदान करने की भी आवश्यकता है। साक्षरता मानव अनुभव का एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय घटक है। यह मानव चरित्र के विकास के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक प्रगति के

लिए आवश्यक है। यह बेहतर स्वास्थ्य, उत्पादकता, आय, क्षमता और सम्मानजनक जीवन के साथ–साथ सामुदायिक भागीदारी में वृद्धि करता है। समाज को बेहतर बनाने के लिए नए विचार और अपनी निजी जीवन शैली शिक्षा का हिस्सा हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच असमानता ज्यादातर कस्बों और गांवों में परिवर्तन की बदलती दरों के कारण होती है। साक्षरता, अन्य नवाचारों की तरह, शहरों में शुरू होती है और समय के साथ ग्रामीण इलाकों में फैलती है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य राजस्थान राज्य में साक्षरता के पैटर्न के साथ–साथ उनके अंतर (शहरी–ग्रामीण) को देखना है। इसकी जनसंख्या 68548437 है, हालांकि साक्षरता दर 66.1 प्रतिशत है। रिपोर्ट भारत की 2011 की जनगणना के आंकड़ों पर आधारित है। जिला अध्ययन इकाई है। शहरी–ग्रामीण अंतरों की गणना की गई है। अध्ययन का लक्ष्य राजस्थान के अंतर को निर्धारित करना है। इसके अलावा, राज्य में पुरुष और महिला दरों के साथ–साथ प्रति लाख जनसंख्या पर कॉलेजों की संख्या के बीच महत्वपूर्ण असमानताएं हैं।

***प्रोफेसर**
सिंघानिया विश्वविद्यालय पचेर बारी झुंझुनू
****शोधार्थी**
भूगोल विभाग
स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एण्ड एजुकेशन सिंघानिया विश्वविद्यालय
पचेर बारी झुंझुनू (राज.)

संदर्भ सूची

1. ओझा एस.के. (2015) जनसंख्या एवं नगरीयकरण बौद्धिक प्रकाशन, प्रयागराज (उ.प्र.)
2. भल्ला, एल.आर. (2008) : राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशन्स्, जयपर
3. बालिया शिरीष, अरोड़ा रीता व शर्मा ओ.पी. (2013) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
4. चान्दना आर.सी. (2006) जनसंख्या भूगोल, कल्याणी पब्लिशर्स, राजेन्द्र नगर, लुधियाना।
5. जिला जनगणना पुस्तिका, 1991 व सी.ड़ी. 2011 (ऑन लाईन)
6. गौतम (2007): ने भारत का वृहद् भूगोल,शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2007
7. गुर्जर, रामकुमार (2007) : जल प्रबन्ध विज्ञान, पोइन्टर पब्लिसर्स, जयपुर,
8. हुसैन, माजिद (2000) : कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन, जयपुर,
9. कुमार व शर्मा (1996): ने कृषि भूगोल, मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल 1996,
10. भेंडे और कानिटकर, 1978
11. एस.ए.काज़ी, 2016
12. शकिल, 2012)
13. (जाधव, 2015)